बचाएं जल

विजय वर्धन
भागलपुर

बचाएँ जल

यह जीवन जायेगा जल
नहीं बचायंगे जो जल
जल से जीवन बने सुफल
जीवन का सब कुछ है जल
व्यर्थ न खोल रखें हम नल
बूंद बचाएँ बचेगा जल
व्यर्थ बहाएंगे जो जल
मर जायेंगे आज या कल
चिंतन का अब विषय है जल
संचित करें इसे प्रतिपल
हो जायेगी धरा विकल
सूखा कहीं जो इसका जल
अब तो मेघ भी करता छल
कहाँ गिराता मूसल जल
जंगल से बनते बादल
बादल देते हमको जल
जल से प्राणी बनें सबल
खिल कर होती धरा सजल
अब दिखता है एक ही हल
चलो बचाएं पल–पल जल

जल की महत्ता

बूंद'–बूंद तरसेगा प्राणी
रूकी न गर पानी की हानि
जल, जीवन का जीवन–धन है
धरती का अनमोल रतन है
मत बिखराओ कर नादानी
सलिल कहीं जो नहीं मिलेगा
प्यास हमारा दम घोंटेगा
याद आयेगी हमको नानी
शुरू करें संचयन नीर का
मूल तत्व जो हर शरीर का
भूलें नहीं ये अनुपम वाणि
गंगा यमुना सूख रही हैं
हमसे देखो रूठ रही हैं
सरस्वती बनने की ठानी

अनमोल खजाना

पानी है अनमोल खजाना
व्यर्थ इसे ना कभी बहाना
अपना धर्म है इसे बचाना
वरना होगा फिर पछताना
जीव–जन्तु का प्राण है पानी
इससे मिलती है जिंदगानी
दुनिया में इसकी नहीं सानी
जल जीवन है हर जीवन का
इससे खिलता फूल कमल का
इसकी गाथा बहुत पुरानी
कहती आई दादी नानी
जंगल दिन–दिन कटते जाते
जो वर्षा को ये ले आते
हम सब मिलकर पेड़ लगाएँ
जगह–जगह पर इसे उगाएँ
धरती पर जंगल उगवाएँ
वर्षा को फिर से बुलवाएँ
नद–नाले सब भर जाएँगे
गीत खुशी के सब गाएंगे

पेड़ लगाएँ

पेड़ लगाएँ हम जीवन में
दृढ़ संकल्प करें हम मन में
वन न रहेगा हम न रहेंगे
भालू, चीते सब विसरेंगे
फूल खिलेंगे नहीं चमन में
दूर करें दूषित मनमानी
और बचाएँ पादप प्राणि
प्रतिपल हों जैसे सावन में
जंगल देता हमको मंगल
और मिटाता सभी अमंगल
इसकी चर्चा चले भुवन में
सुन्दर लाल बहुगुणा का था
चिपको आंदोलन सुन्दर–सा
पेड़ बच गए हर मधुवन में
जंगल होगा हम भी होंगे
प्राण–वायु, जल सभी बहेंगे
कोयल कूकेगी कानन में
प्राणी करके हम पेड़ लगाएँ
हर प्राणी को गले लगाएँ
मुक्त करें जो हैं बंधन में